प्राथमिक शिक्षक

वर्ष: 34 अंक: 1 जनवरी 2010

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. कहानी कहने का उद्देश्य — गिजुभाई बधेका — 5

2. एक समय की बात है... — रौमिला सोनी — 15

3. पढ़ दो एक कहानी — लता पाण्डे — 22

4. कथावाचन की शैलियाँ — हरि कृष्ण देवसरे — 28

5. हमें कहानियाँ अच्छी क्यों लगती है? — अक्षय कुमार दीक्षित — 32

6. कथालोक — वसीली सुखोम्लीन्सकी — 37

7. लोककथा 'गड़रिया राजा' अर्थ एवं विश्लेषण — नीरजा मिश्रा, अनुवादक-सीमंतनी रांगेय राघव — 46

8. सुनना, गुनना और सुनाना कहानी का — हरदर्शन सहगल — 49

9. बचपन : कहते-कहते बनी कहानी — क्षमा शर्मा — 52

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं– (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार।

यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

10. बच्चों को कहानियाँ क्यों सुनाएँ?	संजीव ठाकुर	54
11. कविता भी, कहानी भी	लता अग्रवाल	57
12. कथा-कथन कौशल	राम निहोर तिवारी	61
13. कहानी पठन क्यों और कैसे?	अश्विनी कुमार गर्ग मृदुला तिवारी	66
14. कहानी उत्सव	महेंद्र कुमार मिश्रा	72
15. कैसी हों कहानियाँ? (सीख का बोझ उठाए या जो मन को गुदगुदाए)	शारदा कुमारी	77

पठनीय

16. कथा-कहानी का शास्त्र	लच्छा सिंह	85
परख		89

बालमन कुछ कहता है

17. काश हमारा स्कूल देर से लगता	राधिका कौल	90
18. मैंने बनाई कहानी	मानवी जयंथ	91

कविता

19. स्कूल से आते हुए, बस्ते में मैंने	गुलज़ार	